डा.पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर- 416 004

## संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु-शोध प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर

तिथि 29 JUN 1998

अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डा. वसंत केशव मोरे
प्रमुख अन्वेषक,
बृहत् शोध परियोजना (यु.जी.सी.)
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

# प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु. संगिता निवृत्ती पोवार ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम् . फिल् (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध ``कमलेश्वर' के उपन्यासों की नायिकाओं का अध्ययन`` मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। कु. संगिता निवृत्ती पोवार के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर

तिथि :- 2 9 JUN 1998

शोधनिर्देशक

( डा. वसंत केशव मोरे)

## प्रख्यापन

यह लघु-शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. के लघु-शोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

शोध छात्रा

(कु. संगिता निवृत्ती पोवार)

कोल्हापुर

तिथि 29 JUN 1998

# प्राक्कथन

# प्राक्कथन

प्रतिष्ठित साहित्यकार कमलेश्वर फिल्मों के क्षेत्र में भी अत्यंत प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं। साहित्य निर्मिती के साथ-साथ उन्होंने फिल्म निर्माण, फिल्मी पटकथा, लेखन तथा संवाद लेखन आदि कार्य किये है। वैसे भी बचपन से ही मेरी तरह हर कोई फिल्मों का चहेता होता है। मैंने जब 'आँधी' यह विवादग्रस्त फिल्म देखी तो मैंने सबसे पहले यह जानने की कोशिश की कि इसका कथानक किसने लिखा है? मुझे इस बात का पता चला कि अन्य कई मशहुर फिल्मों की पटकथा लिखनेवाले कमलेश्वरजी ने इस फिल्म की कथा लिखी है जो उनके एक उपन्यास की कथा है। तब मैंने उनके लगभग सभी उपन्यास पढ़ डाले।

एम. फिल में आने के पश्चात् मुझे यह सुअवसर प्राप्त हुआ कि मैं किसी भी साहित्यकार की कृति पर अपना लघुशोध प्रबंध लिख सकती हुँ जो मुझे पसंद हो। मैंने अपने निर्देशक डा. वसंत केशव मोरे सर जी से पूछा कि क्या मै कमलेश्वरजी के उपन्यासों पर कुछ कर सकती हुँ? तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी।

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया कि क्या अब तक किसी विद्वान ने इस पर कार्य किया है ? इसकी खोज करते हुए मुझे मालुम हुआ कि इसके पहले शिवाजी विश्वविद्यालय में कमलेश्वर जी पर-

1. प्रा. सरदार मुजावरजी का 'कमलेश्वर के लघु उपन्यास' यह लघु-शोध प्रबंध 1981 में स्वीकृत हो चुका है।

2. अरुण कुमार कांबळेजी का 'कमलेश्वर की कहानियों में प्रतिबिंबित महानगरीय जीवन' लघु-शोध प्रबंध 1991 में स्वीकृत हो चुका है।

3. सुनंदा मोहिते जी का 'कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ' लघुशोध प्रबंध 1994 में स्वीकृत हो चुका है।

4. सुचेता पवारजी का 'कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यासों के नारी पात्र' लघु शोध प्रबंध 1996 में स्वीकृत हो चुका है।

लेकिन 'कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का अध्ययन' इस विषय पर किसी ने भी कार्य नहीं किया है। अत: मैंने यह विषय चुना है।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्न लिखित प्रश्न थे।

1. कमलेश्वरजी के कृतित्वपर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पडा है ?

2. कमलेश्वर के उपन्यासों का कथानक क्या है ?

3. कमलेश्वर ने कौन-कौनसे विविध रूपों में नायिकाओं को प्रस्तुत किया है ?

4. कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं की समस्याएँ कौन-सी हैं ?

5. कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण कैसे हुआ है?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध में किया हे और अंत में उपसंहार के रूप में दे दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघूशोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

**प्रथम अध्याय :- "कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"**

इस अध्याय में मैंने कमलेश्वर के जीवन परिचय के साथ उनके व्यक्तित्व के पहलुओं को प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर की फिल्में आदि को प्रस्तुत कर अलग-अलग विधाओं में उनकी विशेषता बताते हुए उनके साहित्य का परिचय दिया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

**द्वितीय अध्याय :- "कमलेश्वर के उपन्यासों का सामान्य परिचय।"**

इसमें कमलेश्वर के उपन्यासों पर आलोचनात्मक टिपण्णी करते हुए सभी उपन्यासों का कथानक लिखा है। अंत में निष्कर्ष है।

**तृतीय अध्याय :- "नायिका : विकास, स्वरूप, एवं प्रकार।"**

इस अध्याय में प्राचीन काल में नायिकाओं का स्वरूप विकास एवं प्रकार कैसे थे, इसका विश्लेषण करते हुए स्वातंत्र्योत्तर काल में अलग- अलग विधाओं में नायिकाओं का रूप कैसे बदलता चला गया, इसका विश्लेषण करते हुए अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**चतुर्थ अध्याय :- 'कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं के विविध रूप'**

इस अध्याय में नायिकाओं की विविध श्रेणियों का विश्लेषण करके कमलेश्वर के उपन्यासों में उनमें से नायिकाओं के कितने रूप पाये जाते है इसका विस्तार से विवेचन किया है अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**पंचम अध्याय :- 'कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओंकी विभिन्न समस्याएँ'**

इस अध्याय में हर एक उपन्यास की नायिकाओं के जीवन में आनेवाली विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

**षष्ठ अध्याय :- 'कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण'** इस अध्याय में उपन्यासों की नायिकाओं की चरित्रगत विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

उपसंहार- अंत में मैंने उपसंहार के रूप में मैंने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किये है।

## ऋण निर्देश

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हुँ।

प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. वसंत केशव मोरेजी के निर्देशन में पूर्ण किया है। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजुद भी आप ने समय-समय पर बहुमुल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया। आपके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य असंभव था। इसलिए मैं आपकी अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी है।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटीलजी, आदरणीय डॉ. अर्जुन चव्हाणजी (अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,शिवाजी विश्वविद्यालय) का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा है।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी श्री. निवृत्ती पोवार और माताजी श्रीमती शांता पोवार, मेरे दो भाई किरण, मिलिंद और मेरे पति रमेश सुर्यवंशी जिनके प्रोत्साहन तथा आशीर्वाद के बिना यह कार्य असंभव था उनके आशीर्वाद से ही आज मैंने अपना कार्य सफलता पूर्वक पूरा किया है उनकी मैं हमेशा के लिए ऋणी हुँ।

मेरे सहपाठी और मित्रपरिवार में कु. शामला कोळेकर, श्री. भारत कुचेकर और विजया कांबळे ने भी मेरी सहायता की उनकी शुभ कामनाएँ मेरे साथ रही उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ, ग्रंथालय के पदाधिकारी तथा ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनका भी आभार प्रकट करती हूँ। उन ग्रंथकार-लेखकों का आभार प्रकट करना अपना दायित्व समझती हूँ जिनके ग्रंथों से मैं लाभन्वित हुई हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य का टंकलेखन सुचारू रूप से करनेवाले श्री. मिलिंद भोसले (कोल्हापुर) जी की भी मैं आभारी हूँ।

अंत में इस कृति में होनेवाली त्रुटियों को स्वीकार करते हुए विनम्रता के साथ मैं अपना लघु शोध-प्रबंध विद्वज्जनों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापुर

दिनांक :-

शोधछात्रा

(कु. संगिता निवृत्ती पोवार)

<u>अनुक्रमणिका</u>


| अ.क्र | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | प्रथम अध्याय | 1 से 15 |
| | 'कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' | |
| | कमलेश्वर : जन्म बचपन शिक्षा एवं परिवार | |
| | नौकरियाँ/ उपनाम / अन्यकार्य। | |
| | कमलेश्वर का व्यक्तित्व। | |
| | कमलेश्वर और उनकी फिल्में। | |
| | कहानीकार कमलेश्वर। | |
| | कमलेश्वर की आरंभिक, कहानियाँ। | |
| | कहानी संपादक कमलेश्वर। | |
| | आलोचक कमलेश्वर। | |
| | कमलेश्वर का अन्य साहित्य। | |
| | निष्कर्ष। | |
| 2. | द्वितीय अध्याय | 16 से 31 |
| | 'कमलेश्वर के उपन्यासों का सामान्य परिचय' | |
| | 1) एक सड़क सत्तावन गलियाँ। | |
| | 2) डाक बंगला। | |
| | 3) लौटे हुए मुसाफिर। | |
| | 4) तीसरा आदमी। | |

5) काली आँधी।

6) अगामी अतीत।

7) वही बात।

8) सुबह-दोपहर-शाम।

9) रेगिस्तान।

10 ) समुद्र में खोया हुआ आदमी।

निष्कर्ष।

3. तृतीय अध्याय 32 से 53

`नायिका : स्वरूप, विकास एवं प्रकार`

अ) नायिकाओं का प्राचीन स्वरूप।

स्वकीया नायिका / परकीया नायिका / सामान्या नायिका।

नायिकाओं के अलंकार।

नायिका भेद का मुल्यांकन।

ब) नायिकाओं का आधुनिक स्वरूप।

हिंदी कहानियों में नायिका की कल्पना।

हिंदी उपन्यास में नायिका की कल्पना।

हिंदी नाटकों में नायिका की कल्पना।

भारतेंदू युग / द्विवेदी युग / प्रसाद युग / प्रसादोत्तर युग ।

क) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में नायिका का स्वरूप।

लेखिकाओं के कथा साहित्य में नायिकाएँ।

लेखकों के कथा साहित्य में नायिकाएँ।

लेखिका नाटक एवं एकांकीकारों के नाट्यसाहित्य में नायिकाएँ।

लेखक नाटक एवं एकांकीकारों के नाट्य साहित्य में नायिकाएँ।

निष्कर्ष।

4. चतुर्थ अध्याय 54 से 63

`कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं के विविध रूप`

अ) नायिकाओं के विविध रूप -

सफल प्रेमिका / असफल प्रेमिका / पारिवारिक नायिका / अपारिवारिक नायिका /

फैशनपरस्त एवं विलासिनी / विधवा / वेश्या / नर्तकी / राजनीतिज्ञ / विरांगना /

कृषक बाला / मजदुरिन / जासुस / साहसी / कुण्ठित।

ब) कमलेश्वर के नायिकाओं के विविध रूप।

सफल प्रेमिका / असफल प्रेमिका / अपारिवारिक नायिकाएँ/ विधवा नायिका /

कुण्ठित नायिका / अंतर्मुखी / बहिर्मुखी / संस्कारशील / प्रगतिशील /

आस्थावान / खण्डित व्यक्तित्ववाली / मोहभंग की स्थिति से गुजरनेवाली /

आत्माभिमानी ।

निष्कर्ष।

5. पंचम अध्याय 64 से 78

`कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं की विभिन्न समस्याएँ

परिवार विघटन की समस्या

अनमेल विवाह

असफल प्रेम

अकेलापन

चाँदनी -

वेश्या जीवन / शोषिता स्त्री / धंदे के प्रति इमानदार /

समीरा -

अकेलापन / नकुल के प्रति आकर्षित / ऊब

बड़ी दादी

अद् भुत चरित्र/ अंग्रेज विरोधक / दृढ़ प्रतिज्ञ

कमलेश्वर की उपन्यासों की नायिकाओं का समान चरित्र-चित्रण

निष्कर्ष

उपसंहार - 94 से 99

संदर्भ-ग्रंथ सूची - 100 से 102

बुजूर्गों की उपेक्षा

झुठी प्रतिष्ठा की समस्या

नैतिक मुल्यों का पतन

कुँआरी माता समस्या

पुरुष की वासना की शिकार नारी

वेश्या समस्या

आर्थिव विवशता

निष्कर्ष

6. षष्ठ अध्याय 79 से 93

`कमलेश्वर के उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण`

बंसिरी -

आर्थिक दृष्टि से विवश / वेश्या / दोहरा व्यक्तित्व / दृढ़निश्चयी / पश्चातापदग्ध

इरा -

भावूक एवं संवेदनशील / साहसी प्रेमिका / शक के घेरे में नौकरी / मजबुर /

पुरुषों को आकर्षित करनेवाली / आर्थिक विवशता / आस्थिर जीवन जीनेवाली / अकेलापन

मालती -

सफल राजनीतिज्ञ / दाम्पत्य सम्बन्धों में तनाव / दृढ़ एवं स्थिर /

निर्णय पर अड़िग / पति प्रति सम्मान भावना / पारिवारिक जीवन में असफल

चित्रा -

पति से बेहद प्यार / पति की उपेक्षा / द्विधा मनस्थिति / दूसरे पुरुष के प्रति आकर्षण और प्यार /

अहंभाव / दृढ़निश्चयी